ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 दिसम्बर 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०८, वर्ष-१२
मार्गशीर्ष, विक्रमी २०७५ (दिसम्बर 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सूयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥ –ऋ० ५। ३। २८। २॥

व्याख्यान–हे ईश्वर! (भगः) आप और आपका दिया हुआ ऐश्वर्य (शं नः) हमारे लिए सुखकारक हो। (शमु नः शंसो अस्तु) आपकी कृपा से हमारी सुखकारक प्रशंसा सदैव हो। (पुरन्धिः शमु सन्तु रायः) संसार के धारण करनेवाले आप तथा प्राण वायु और सब धन आपकी कृपा से आनन्दायक हों। (शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः) सत्य, यथार्थ धर्म, सुसंयम और जितेन्द्रियतादिलक्षणयुक्त की जो प्रशंसा (पुण्यस्तुति) सब संसार में प्रसिद्ध है, वह परमानन्द और शान्तियुक्त हमारे लिये हो। (शं नो अर्यमा) न्यायकारी आप (पुरुजातः) अनन्त सामर्थ्ययुक्त हमारे कल्याणकारक होओ ।।

सम्पादकीय

हमारे पूर्वजों की जाति.......?

वर्त्तमान में देश के पांच प्रमुख राज्यों में विधानसभा के निर्वाचन सम्पन्न हुए हैं, जिनका परिणाम शीघ्र ही आने वाला है, देश की परिस्थिति ऐसी बना दी गयी है कि प्रति वर्ष कहीं न कहीं निर्वाचन चलता ही रहता है, किन्तु इस विधानसभा निर्वाचन में जिस प्रकार जातिवाद का विष वमन किया गया है, सम्भवतः यह सर्वाधिक विषाक्त रहा होगा और यह विषवमन भी राजस्थान की वीर भूमि पर सर्वाधिक हुआ है। इसमें भी दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि–यह विषवमन विपक्ष की ओर से हुआ, तो पक्ष भी पीछे नहीं रहा, विपक्ष के वरिष्ठतम नेता ने सत्तापक्ष के महत्त्वपूर्ण नेताओं की जाति का वर्णन तिरस्कार पूर्ण रीति से किया, खुले मंच से हेय बताया और साथ ही 'धर्म' के विषय की सारी ठेकेदारी अपने सिर ले ली, साथ ही एक वर्ग-विशेष को ही धर्म के लिए उत्तरदायी घोषित कर दिया, ऐसी घटिया मानसिकता के कारण ही पूर्व में समाज अवनति को प्राप्त हुआ था, सहस्रों वर्षों की गुलामी इसी के परिणाम स्वरूप हमारे पूर्वजों को झेलनी पड़ी थी, उस भयानक पीड़ादायक काल के अनुभवों से वर्त्तमान के नेताओं को सीखना चाहिए था, जिन कारणों से यह पराधीनता आयी थी, उन सभी कारणों का समूल निदान करना तो दूर, हमारे यह खेवनहार नेतागण उन्हीं कारणों को पुनर्जीवित कर अंग्रेजों की "बांटो और राज करो" की षड्यन्त्रकारी प्रवृत्ति को ही प्रचारित-प्रसारित करना चाहते हैं, दूसरी और सत्तापक्ष के वे लोग हैं, जिन्हें वैचारिक दृष्टि से कुछ प्रबुद्ध समझा गया था, वे वर्त्तमान से भी पीछे को लौटे और पहुंच गये उन श्रेष्ठ पूर्वजों तक जिन्हें अपनी जाति का वह काल्पनिक ज्ञान था ही नहीं, जो वर्त्तमान के योगियों को लाखों वर्षों के उपरान्त हुआ है। हमारे श्रेष्ठ सिद्धान्तवादी ऋषियों ने जाति का एक ही सिद्धान्त दिया था– 'समान प्रसवात्मिका जातिः' अर्थात् जिनका जन्म एक समान योनियों में होता है, वे एक जाति के कहलाते हैं, यथा– गोजाति, अश्व जाति, मनुष्य जाति आदि। अतः हमारी हमारे पूर्वजों की और उनके भी पूर्वजों की एक ही जाति है और थी-मनुष्य जाति। और आगे भी पीढ़ी दर पीढ़ी यही रहेगी। पुनरपि यह जो वर्त्तमान में प्रचलित जाति, विशेषतः आर्यवंशियों (हिन्दुओं) में पायी जाती है, यह सब क्या है? यदि इस प्रश्न पर विवेक पूर्वक विचार किया जाय तो भी स्पष्ट हो जाता है कि इन जातियों का जन्म लेने से कोई तात्पर्य नहीं रहा है, अपितु जिन लोगों ने जैसी आजीविका को चुना उसके अनुसार उन लोगों को उन आजीविका प्रधान नामों से पुकारने लगे, जैसे- वर्त्तमान में डॉक्टर, इंजीनियर, ड्राइवर, पुलिस, आपरेटर आदि। इसी प्रकार पूर्वकाल में मिट्टी के घड़े आदि बनाने वाले को कुम्भकार, रथ बनाने वाले को रथकार, चमड़े

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

का काम करने वाले को चर्मकार, लोहे का काम करने वाले को लोहकार आदि शब्दों से अभिहित करने लगे। संस्कृत भाषा का उच्चारण जब अशुद्ध होने लगा तब कार शब्द में से 'का' हट गया, शब्द अपभ्रंश होकर कुम्भकार को कुम्हार, चर्मकार को चमार, लोहकार को लुहार आदि कहने लगे। पीढ़ी दर पीढ़ी जब अधिकांश लोग उसी आजीविका में बंधे रहकर कार्य करते रहे, तब वे उन्हीं शब्दों से पुकारे जाते रहे, अज्ञानता और दुराग्रहवश जब उन्होंने यह सब आजीविका के कार्य छोड़ दिये, तब भी लोगों ने उन कर्मप्रधान नामों से पुकारना, बोलना नहीं छोड़ा, बस फिर तो जाति पर जाति बनती चली गयी। इन्हीं कर्मसूचक शब्दों के प्रचलन से जब परस्पर में व्यर्थ की छूआ-छूत, ऊंच-नीच बढ़ी तब तो अवनति बढ़ती ही चली गयी, फलस्वरूप भेदभाव फैलते-फैलते घृणा और द्वेष में बदलता चला गया, तब समाज सुधार की प्रवृत्ति वाले लोगों ने उपेक्षा के शिकार कुछ वर्ग के लोगों के लिए नये-नये शब्द गढ़ने प्रारम्भ किये जैसे- हरिजन, दलित, वंचित, पिछड़ा, आति पिछड़ा आदि। अब इनमें से बहुत से शब्द प्रतिबन्धित हो गये, होने भी चाहिये थे। लेकिन कुछ अधिक प्रचलन में बने हुए हैं, ऐसा ही एक शब्द है - 'दलित'। और यह वर्त्तमान काल का प्रचलित शब्द लाखों वर्षों पूर्व हुए श्री हनुमान जी के साथ जोड़ दिया गया।

पाठक बन्धुओं! भगिनियों! हम सभी चिन्तनशील, विवेकशील जनों को विचारना चाहिए कि यह कुछ वोटों के लिए, थोड़ी सी सत्ता के लिये, थोडे से स्वार्थ की पूर्त्ति के लिए हमारे ये नेतागण समाज का, भाषा का, विचारों का कितना अवमूल्यन कर रहे हैं? और कितना पतन होगा? क्या होता ही रहेगा या इसका कोई समाधान भी होगा? यदि होगा तो कौन करेगा? क्या हमारा कोई कर्तव्य नहीं है? और यदि है तो, हमें अपना कर्तव्य निश्चय पूर्वक जानकर समझकर उसको प्रचारित-प्रसारित करना होगा, समाज और राष्ट्र की उन्नति के उपाय निश्चय से जन-जन तक पहुंचाने ही होंगे।

ओ३म्

सूचना

आर्य प्रचारक कक्षा

6 जनवरी 2019 से 13 जनवरी 2019

(आर्य प्रचारक का पूरा पाठ्यक्रम एक साथ)

स्थानः-

आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय

चित्तौड़ा झाल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश-251314

जिन आर्यों का पंजीकरण विभिन्न आर्य गुरुकुल महाविद्यालयों में हो चुका है या जो अन्य आर्यगण आर्य प्रचारक कक्षा एक साथ करना चाहते हैं, वे सब इस कक्षा में उपस्थित रह सकते हैं। कक्षा में सम्मिलित होने की सूचना व अनुमति पहले ही सुनिश्चित कर लेवें क्योंकि कक्षा में स्थान सीमित है। सभी आर्यगण ५ जनवरी सांयकाल तक गुरुकुल में पहुंचे।

अधिक जानकारी व कक्षा में प्रवेश के लिये निम्न आचार्यों से सम्पर्क करें-

आचार्य सतीश जी	आचार्य संजीव जी	आचार्य महेश जी	आचार्य धर्मपाल जी
9350945482	9045353309	9813377510	9812905265

ऋषि दयानन्द का वैश्विक दृष्टिकोण

(यथार्थ मानवतावाद)

"यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न और वसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तर की झूठी बातों का पक्षपात न कर, यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देश वा मत वालों के साथ भी वैसा ही वर्त्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है।"

- सत्यार्थप्रकाश

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारक विभिन्न विद्यालयों में

समसामयिक

आर्य विद्या का प्रचार-प्रसार : हमारा कर्त्तव्य

-आचार्य सतीश

समाज में अनेक विषय ऐसे भी चर्चा में रहते है, जिन पर आर्यो को अपना दृष्टिकोण रखना होता है तथा जो न केवल उन्हें प्रभावित करते हैं अपितु समाज और राष्ट्र पर भी जिनका गहरा प्रभाव पड़ता है। इन बहुत सारी घटनाओं पर आर्यो के दृष्टिकोण से सोचना तथा उन्हें सही परिपेक्ष्य मे समझना हमारे लिए आवश्यक है क्योंकि आर्यो का कार्य केवल एक वर्ग के लिए सीमित नहीं है अपितु उसका कार्य समाज के हर वर्ग को देखना है, सम्पूर्ण समाज का आर्यीकरण तभी सम्भव है जब समाज के सभी वर्गो को आर्यो के सिद्धान्तों से परिचित कराया जा सके। वेद की विचरधारा जो आर्यो का आधार है सम्पूर्ण संसार के लिए है, पूरी मानव जाति के लिए है। केवल इतना ही नहीं संसार की हर प्रकार की व्यवस्था, हर क्षेत्र के लिए वेद के निर्देश न केवल हितकारी हैं अपितु आवश्यक भी हैं। प्रत्येक व्यवस्था व जीवन के प्रत्येक पहलू को सुव्यवस्थित करना केवल वेद के सिद्धान्तों से ही सम्भव है। दूसरे शब्दों में हर प्रकार की वह व्यवस्था जो संसार के लिए हितकार है, प्राणियों, प्रकृति, मानवों आदि को सुव्यवस्था देती है, वह वेद सम्मत ही है। अत: प्रत्येक विषय आर्यो के लिए विचारणीय है। लेकिन दुर्भाग्य से पिछले लम्बे समय से आर्यो ने अपने आपको एकांगी बना लिया और यही सोचते रहे कि आर्यो का कार्य केवल उनके लिए है जो आर्य विचार से सहमत हैं, उसको समझते हैं, उसके अनुसार चलना चाहते हैं। आर्य समाज के अधिकांश उपदेशक ऐसे हो गए-जो केवल आर्यो में ही अपना प्रचार करते हैं। कुछ विद्वान् तो ऐसे संकीर्ण हो गए कि जो उनकी बात को काट देता है, उनके किसी सिद्धान्त पर तर्क करता है तो उसे सीधा उत्तर देते हैं कि हमारा तो यही सिद्धान्त है मानना है तो मानो, नहीं तो रहने दो अर्थात् उसको सन्तुष्ट करने का प्रयास ही नहीं करते हैं। वह आपके सिद्धान्त की हर पहलू से जांच-परख करना चाहता है लेकिन वे उपदेशक उसकी उस जिज्ञासा को न समझकर केवल आत्म-सन्तुष्टि से ही उसे सन्तुष्ट करना चाहते हैं। ऋषि दयानन्द की शास्त्रार्थ परम्परा को चलाना ही नहीं चाहते।

वहीं कुछ विद्वान् ऐसे भी हैं जो आर्यो की सीमित संख्या को ही अपनी जीत मानते हैं और यह कहकर अपने को आत्मगुग्ध कर लेते हैं कि उच्च अधिकारी तो थोड़े ही होते हैं। हम श्रेष्ठ हैं, थोड़े ही प्रयाप्त हैं, आर्यो की संख्या थोड़ी है तो अच्छा ही है। बड़ी ही विस्मयकारी सोच है! फिर तो ऋषि दयानन्द और उसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम आदि ने जो आर्यो के विस्तार के लिए बलिदान दिया वह व्यर्थ । वे आर्य बन गए थे उन्हें औरों को आर्य बनाने की आवश्यकता ही नहीं थी, बिना बात बलिदान दिया। वास्तव में ऐसे व्यक्तियों के लिए इन बलिदानियों का कोई महत्व नहीं है। 'श्रेष्ठ व्यक्ति समाज में थोड़े ही प्रर्याप्त हैं' इस सिद्धान्त को मानने वालों के लिए तो वेद का आदेश **कृण्वन्तो विश्वार्यम्** भी निरर्थक है। आर्य समाजी जो इसका उद्घोष करते हैं, उसकी भी कोई आवश्यकता नहीं है। आर्यो की उच्च आधिकारियों से तुलना कर यह कहना कि अधिकारी (अफसर) तो थोड़े ही होते हैं बड़ा हास्यास्पद है, आत्मश्लाघा है, आर्यो के सिद्धान्तों को गैर-आर्यो में प्रतिस्थापित न कर पाने की अपनी असमर्थतता की झेंप मिटाने के लिए है। फिर वेद की वाणी प्रत्येक मनुष्य के लिए है उसका क्या औचित्य है? आर्यो! वैदिक सिद्धान्त को धारण करके अधिकार बोध से ग्रस्त होने की अपेक्षा कर्तव्य-भाव को प्राप्त होने की आवश्यकता है। अर्थात् वैदिक सिद्धान्तों को जानकर यह सोच लेना कि मैं तो हो गया उच्च अधिकारी, मैं तो हो गया सबसे श्रेष्ठ, मैं तो बन गया आई.ए.एस. अफसर मुझे क्या? ये सब तो मेरे मातहत हैं, इन्हें तो स्वयं ही मेरे पीछे-पीछे हो लेना चाहिए। मेरी तो समाज में प्रतिष्ठा हो ही गई है, मुझे तो कार्यक्रम पर कार्यक्रम मिल ही रहे हैं, मुझे तो कुछ श्रोता मिल ही जाते हैं, इस अधिकार बोध की अपेक्षा होना तो यह चाहिये कि मुझे तो सौभाग्य प्राप्त हो गया, मुझे किसी के प्रयास से, कुछ मेरे संस्कार से, मैं तो इस मार्ग पर चल पड़ा, अब मेरा कर्त्तव्य बनता है कि मैं अन्यों का भी कल्याण करूं। जो आर्य बन चुके हैं केवल उन्हीं के बारे में न सोचूं अपितु मेरा अधिकांश पुरूषार्थ ऐसे लोगों के लिए हो जो आर्यत्व से विहीन हों, जिन तक यह विद्या नहीं पहुची है उनको इस विद्या का लाभ पहुंचाऊँ। वेद विद्या जितनी भी मुझे मिली है वह मेरे लिए एक कर्त्तव्य के भाव पैदा करती है जब तक मैं उसे अन्यों को न दे लूं तब तक ऋषि ऋण से उऋण नहीं हो सकता। वेद विद्या की प्राप्ति मेरे अन्दर अंहकार पैदा न करे अपितु मेरे ऊपर ऋण का भाव जागृत करे कि मैं यह विद्या अन्यों को दूं, जितनी मिली है उतनी दूं। जब ऐसा भाव पैदा होगा तभी आर्य निर्माण होगा अन्यथा तो आर्य समाज भी ऐसे ही सिमटा रह जाएगा और कुछ लोगों की आत्ममुग्धता, कुछ की जीविका और कुछ लोगों की सामजिक सन्तुष्टि की पूर्ति का साधन मात्र रह जाएगा।

एक और विषय पर चर्चा करके अपनी बात समाप्त करता हूं। कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक विद्या पूरी न कर लूं, प्रचार में लगना ठीक नहीं, विद्या पूरी होने पर ही प्रचार करना चाहिए, जिससे सामने वाले की सभी शंकाओं का समाधान कर सकूं। अगर हर आर्य इस प्रकार सोचे तो सभी विद्या प्राप्त करने में ही लग जाएंगे, देने वाला कहां से मिलेगा क्योंकि विद्या तो पूर्ण कभी होती नहीं उसे प्रचार का अवसर मिलेगा नहीं। इस प्रकार की सोच व्यक्ति को आत्मकेंद्रित बना देती है। वह कार्य क्षेत्र में उतर नहीं पाता है। संकोचवश संकुचित रह जाता है। फिर क्या होना चाहिए-होना यह चाहिए कि जितनी विद्या प्राप्त होती जाए उतनी विद्या अन्यों को देने का प्रयास करे, अपनी सीमाएं तय करे, कार्य करे। कार्य करेगा तो विद्या को बढ़ाने का अवसर भी मिलेगा और आवश्यकता भी अनुभव होगी। साथ ही इस अंहकार में न आए कि अब मैं विद्या देने लग गया अब मुझे और विद्या की आवश्यकता नहीं, अपितु पारदर्शिता बरते, जितना ज्ञान हो, उतना ही दे, उसे ही स्वीकार करे। पूरी निष्ठा से कार्य करे, कोई घलमेल न करे। वह ऐसा भी न करे कि अपनी विद्या के द्वार ही बन्द

-शेष अगले पृष्ठ पर ...

कर ले। ऋषि का भी यही निर्देश है, इसी से एक व्यक्ति की योग्यता व श्रेष्ठता उत्तरोतर बढ़ती चली जाती है।

विद्या निरन्तर बढ़ाने की आवश्यकता है तो विद्या के निरन्तर प्रसार की भी आवश्यकता है। विद्या लेकर घर बैठ जाना घोर पाप है। उससे किसी का हित न करना, अन्यों को उसका लाभ न देना अधर्म है। अत: आओ जन-जन के आर्यीकरण की और बढ़ें। समाज के हर वर्ग की सोचें। गरीब से गरीब, वंचित से वंचित व्यक्ति तक आर्य विद्या के प्रकाश की किरणें पंहुचायें, आर्यो के सभी सिद्धान्त न सही कुछ सिद्धान्तों से तो वह परिचित हो। पूर्ण रूप से न सही आंशिक रूप से ही सही कुछ सिद्धान्तों को तो जाने, लक्ष्य पर भले न पंहुचा पाएं लेकिन उसे मार्ग पर चला तो दें, यदि चल पड़ेगा तो लक्ष्य तक भी पहुंचेगा। हमारा सौभाग्य उदय हुआ है तो औरों को भी प्रकाश की एक किरण दिखा दें जिससे वह भी विद्या से परिचित हो सके। उसके भी जीवन में कुछ अन्धकार दूर हो, वह भी विद्या के सुख को चख सके। कार्य भले ही कठिन है लेकिन प्रयास तो हो। यहां पर श्रेष्ठता का भाव उत्पन्न हो, उच्च अधिकारी बनने का भाव उत्पन्न हो कि कठिनतम कार्य कुछ ही लोग किया करते हैं (न कि श्रेष्ठ लोग थोड़े ही होते हैं)। जिससे हम अपने कर्त्तव्य पालन में सक्षम हो सकें। हमें याद रखना चाहिये कि आर्य बनने के साथ औरों को आर्य बनाना और भी कठिन परन्तु आवश्यक कार्य है और वही हमें करना हैं।

शंख फूंकना

-आर्य सोनू हरसौला, कैथल

भारतीय संस्कृति में शंख फूंकने (बजाना) का विशेष महत्व रहा है। विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, युद्धारम्भ एवं युद्ध का समापन आदि शंख ध्वनि के साथ किया जाता था। महाभारत पढ़ने से विदित होता है कि उस काल में इसका (शंख का) प्रचलन अत्यधिक बढ़ गया था। शंख का महत्व इतना बढ़ा कि शंखों का नामकरण तक महाभारत काल में होने लगा था। यथा श्रीकृष्ण के विख्यात शंख का नाम पाञ्चजन्य था। इसी तरह भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव आदि के शंख का नाम क्रमश: पौण्ड्र, देवदत्त, सुघोष, मणिपुष्पक था। युधिष्टिर के शंख का नाम अनन्त विजय था। शंख न केवल धार्मिक प्रतीक मात्र था अपितु उसके स्वास्थ्य लाभ भी हैं जिनको हमारे महापुरुष जानते एवं लाभ उठाते थे। शंख बजाते समय प्राण को बहुत जोर से बलपूर्वक फूंकना पड़ता है। इससे फेफड़ों का व्यायाम होने से फेफड़ों के रोग, खांसी, दमा, श्वास रोग, पीलिया, ब्लड-प्रैशर एवं दिल से सम्बधित रोग नहीं होते। यदि उपरोक्त रोग हैं तो धीरे-धीरे शंख बजाने के अभ्यास से ठीक हो जाते हैं। यही नहीं शंख बजाने से चेहरे और श्वसन तन्त्र का भी व्यायाम होता है जिस कारण गले और मुख के रोग, आंखों की रोशनी तथा स्मरण शक्ति बढ़ती है।

वाहनों के हॉर्न की तीखी आवाज तथा शंख की मोटी-मधुर ध्वनि में अन्तर एक सामान्य मनुष्य भी आराम से कर सकता है। जैसा कष्ट एवं शारीरिक व्याधि वाहनों के हॉर्न की आवाज से होती है वैसी शंखनाद से नहीं। उल्टा शंखनाद हमारे भीतर सात्विक भावना को भरता है क्योंकि आज भिन्न-भिन्न अनुष्ठानों में शंख बजाने का मतलब वही है। इसलिए माना जाता है कि शंखनाद से सकारात्मक ऊर्जा निकलती है जो आत्मबल प्रदान करती है और उच्च आत्मबल वाले व्यक्ति को कभी मनोवैज्ञानिक व्याधियां नहीं होती।

1928 मे बार्लिन विश्वविद्यालय द्वारा की गई शंख पर शोध में भी यहीं सामने आया कि शंखनाद के पीछे मूलभावना शरीर को निरोगी रखने की ही थी।

प्राचीन काल में युद्धारम्भ पर भी शंखनाद किया जाता था। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शंखनाद में प्राणबल का महत्व है। अत: बलशाली प्राण वाला शंख को अधिक नाद से एवं क्षीण प्राण वाला क्षीण शंखनाद कर पाएगा। इससे प्रतिपक्षी को शारीरिक शक्ति एवं आत्मिक बल का परिचय देने हेतु शंखनाद का प्रयोग युद्ध में किया जाता रहा होगा।

शंखनाद के लाभों को सपेरों के उदाहरण से भी समझा जा सकता है। शंख और बीन बजाने की मूल प्रक्रिया एक ही है और यह किंवदन्ति प्रचलित है कि सपेरों की आखें कभी खराब नहीं होती। अत: शंख से भी यह लाभ निश्चित प्रतीत होता है। उपरोक्त विश्लेषण एवं अन्य वैदिक परम्पराओं को देखते हुए, यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मनुष्यमात्र को शंखनाद से लाभ है किन्तु इस पर अभी तक व्यवस्थित अनुसन्धान के अभाव में हमारे पूर्वजों की यह परम्परा जो निश्चिय ही फलदायक है, वर्तमान में केवल आडम्बर का एक भाग बनकर रह गई है।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	7 दिसम्बर	दिन-शुक्रवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-ज्येष्ठा
पूर्णिमा	22 दिसम्बर	दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-मृगशिरा
अमावस्या	5 जनवरी	दिन-शनिवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मूल
पूर्णिमा	21 जनवरी	दिन-सोमवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

प्रश्न-मनुष्यों को विद्या की प्राप्ति और अविद्या के नाश के लिए क्या-क्या काम करने चाहिएं ?

उत्तर-वर्णोच्चारण से लेके वेदार्थज्ञान के लिए ब्रह्मचर्य आदि कर्म करना योग्य है।

प्रश्न-'ब्रह्मचारी' किसको कहते हैं ?

उत्तर-जो जितेन्द्रिय होके ब्रह्म अर्थात् वेदविद्या के लिए, तथा आचार्य-कुल में जाकर विद्या-ग्रहण करने के लिये प्रयत्न करे, वह **'ब्रह्मचारी'** कहाता है ।

प्रश्न-आचार्य किसको कहते हैं ?

उत्तर-जो विद्यार्थियों को अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षापूर्वक विद्या होने के लिए तन, मन और धन से प्रयत्न करे, उसको **'आचार्य'** कहते हैं।

[बालकों को कैसी शिक्षा करें?]

प्रश्न-अपने सन्तानों के लिए माता-पिता और आचार्य क्या-क्या शिक्षा करें?

उत्तर- **मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद ॥** -शतपथब्राह्मण

अहोभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक, विद्वान् माता-पिता और आचार्य के सम्बन्ध में हो। क्योंकि इन तीनों ही की शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है। ये अपने सन्तान और विद्यार्थियों को अच्छी भाषा बोलने, खाने-पीने, बैठने-उठने, वस्त्र धारण करने, माता आदि का मान्य करने, उनके सामने यथेष्टाचारी न होने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि के लिए प्रयत्न से नित्यप्रति उपदेश किया करें। और जैसा-जैसा उसका सामर्थ्य बढ़ता जाए, वैसी-वैसी उत्तम बातें सिखलाते जाएँ। इसी प्रकार लड़के और लड़कियों को पाँच वा आठ वर्ष की अवस्थापर्यन्त माता-पिता, और इसके उपरान्त आचार्य की शिक्षा होनी चाहियें?

प्रश्न-क्या जैसी चाहें वैसी शिक्षा करें ?

उत्तर-नहीं, जो अपने पुत्र-पुत्री और विद्यार्थियों को सुनावें कि सुन मेरे बेटे-बिटियाँ और विद्यार्थी! तेरा शीघ्र विवाह करेंगे। तू इसकी दाढ़ी-मूँछ पकड़ ले। इसकी जटा पकड़ के, ओढ़नी फेंक दे। धौल मार, गाली दे। इसका कपड़ा छीन ले, पगड़ी वा टोपी फेंक दे। खेल-कूद, हँस-रो। तुम्हारे विवाह में फुलवारी निकालेंगे, इत्यादि कुशिक्षा करते हैं, उनको माता-पिता और आचार्य न समझना चाहिए। किन्तु सन्तान और शिष्यों के पक्के शत्रु और दुःखदायक हैं। क्योंकि जो बुरी चेष्टा देखकर लड़कों को न घुड़कते और न दण्ड देते हैं, वे क्योंकर माता-पिता और आचार्य हो सकते हैं? क्योंकि जो अपने सामने यथा-तथा बकने, निर्लज्ज होने, व्यर्थ चेष्टा करने आदि बुरे कर्मों से हटाकर विद्या आदि शुभ गुणों के लिए उपदेश नहीं करते, न तन, मन, धन लगाके उत्तम विद्या-व्यवहार का सेवन कराकर अपने सन्तानों को सदा श्रेष्ठ करते जाते हैं, वे माता-पिता और आचार्य कहाकर धन्यवाद के पात्र कभी नहीं हो सकते। और अपने-अपने सन्तान और शिष्यों को ईश्वर की उपासना, धर्म-अधर्म, प्रमाण-प्रमेय, सत्य, मिथ्या, पाखण्ड, वेद, शास्त्र आदि के लक्षण और उनके स्वरूप का यथावत् बोध करा और सामर्थ्य के अनुकूल उनको वेदशस्त्रों के वचन भी कण्ठस्थ कराकर विद्या पढ़ने, आचार्य के अनुकूल रहने की रीति भी जना देवें, कि जिससे विद्याप्राप्ति आदि प्रयोजन निर्विघ्न सिद्ध हों, वे ही माता-पिता और आचार्य कहाते हैं।

[विद्या-प्राप्ति के उपाय]

प्रश्न-विद्या किस-किस प्रकार और किन कर्मों से होती है?

उत्तर- **चतुर्भिः प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति ।**

आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति ॥

-महाभाष्य अ० १। १। १। आ० १।

विद्या चार प्रकार से आती है-आगम, स्वाध्याय, प्रवचन और व्यवहारकाल ।

आगमकाल-उसको कहते हैं कि जिससे मनुष्य पढ़ानेवाले से सावधान होकर ध्यान देके विद्यादि पदार्थ कर सके।

स्वाध्यायकाल-उसको कहते हैं कि जो पठन-समय में आचार्य के मुख से शब्द, अर्थ और सम्बन्धों की बातें प्रकाशित हों उनको एकान्त में स्वस्थचित्त होकर पूर्वापर विचार के ठीक-ठीक हृदय में दृढ़ कर सके।

प्रवचनकाल-उसको कहते हैं कि जिससे दूसरे को प्रीति से विद्याओं को पढ़ा सकना।

व्यवहारकाल-उसको कहते हैं जब अपने आत्मा में सत्यविद्या होती है, तब यह करना, यह न करना, वही ठीक-ठीक सिद्ध होके वैसा ही अचारण करना हो सके, ये चार प्रकार हैं।

तथा अन्य भी चार कर्म विद्याप्राप्ति के लिए हैं-श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार।

श्रवण-उसको कहते हैं कि आत्मा मन के और मन श्रोत्र-इन्द्रिय के साथ यथावत् युक्त करके अध्यापक के मुख से जो-जो अर्थ और सम्बन्ध के प्रकाश करनेहारे शब्द निकलें उनको श्रोत्र से मन और मन से आत्मा में एकत्र करते जाना।

मनन-उसको कहते हैं कि जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध आत्मा में एकत्र हुए हैं, उनका एकान्त में स्वस्थचित्त होकर विचार करना कि कौन शब्द किस अर्थ के साथ, कौन अर्थ किस शब्द के साथ और कौन सम्बन्ध किस-किस शब्द और अर्थ के साथ, सम्बन्ध अर्थात् मेल रखता, और इनके मेल में किस प्रयोजन की सिद्धि और उलटे होने में क्या-क्या हानि होती है, इत्यादि।

निदिध्यासन-उसको कहते हैं कि जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध सुने-विचारे हैं, वे ठीक-ठीक हैं वा नहीं? इस बात की विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना।

और साक्षात्कार-उसको कहते हैं कि जिन अर्थों के शब्द और सम्बन्ध सुने, विचारे और निश्चिय किये हैं, उनको यथावत् ज्ञान क्रिया से प्रत्यक्ष करके व्यवहारों की सिद्धि से अपना और पराया उपकार करना आदि विद्या की प्राप्ति के साधन हैं।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–
www.aryanirmatrisabha.com
पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक **www.aryanirmatrisabha.com/if=kdk** पर जाएं।

24 नवम्बर–22 दिसम्बर–2018 **मार्गशीर्ष** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस 19 दिसम्बर					रोहिणी कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया 24 नवम्बर	मृगशिरा कृष्ण तृतीया 25 नवम्बर
आर्द्रा कृष्ण चतुर्थी 26 नवम्बर	पुनर्वसु कृष्ण पंचमी 27 नवम्बर	पुष्य कृष्ण षष्ठी 28 नवम्बर	मघा कृष्ण सप्तमी 29 नवम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण अष्टमी 30 नवम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण नवमी 1 दिसम्बर	हस्त कृष्ण दशमी 2 दिसम्बर
चित्रा कृष्ण एकादशी 3 दिसम्बर	स्वाती कृष्ण द्वादशी 4 दिसम्बर	विशाखा कृष्ण त्रयोदशी 5 दिसम्बर	अनुराधा कृष्ण चतुर्दशी 6 दिसम्बर	ज्येष्ठा कृष्ण अमावस्या 7 दिसम्बर	मूल शुक्ल प्रतिपदा 8 दिसम्बर	मूल शुक्ल द्वितीया 9 दिसम्बर
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल तृतीया 10 दिसम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल चतुर्थी 11 दिसम्बर	श्रवण शुक्ल पंचमी 12 दिसम्बर	धनिष्ठा शुक्ल षष्ठी 13 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल सप्तमी 14 दिसम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल अष्टमी 15 दिसम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल नवमी 16 दिसम्बर
रेवती शुक्ल नवमी 17 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल दशमी 18 दिसम्बर	भरणी शुक्ल एकादशी/द्वादशी 19 दिसम्बर	कृतिका शुक्ल त्रयोदशी 20 दिसम्बर	रोहिणी शुक्ल चतुर्दशी 21 दिसम्बर	मृगशिरा शुक्ल पूर्णिमा 22 दिसम्बर	

23 दिसम्बर 2018–21 जनवरी–2019 **पौष** ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
पुष्य शुक्ल पूर्णिमा/प्रतिपदा 21 जनवरी				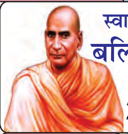 स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर		आर्द्रा कृष्ण प्रतिपदा 23 दिसम्बर
पुनर्वसु कृष्ण द्वितीया 24 दिसम्बर	पुष्य कृष्ण तृतीया 25 दिसम्बर	आश्लेषा कृष्ण चतुर्थी 26 दिसम्बर	मघा कृष्ण पंचमी/षष्ठी 27 दिसम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण सप्तमी 28 दिसम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण अष्टमी 29 दिसम्बर	हस्त कृष्ण नवमी 30 दिसम्बर
चित्रा कृष्ण दशमी 31 दिसम्बर	स्वाती कृष्ण एकादशी 1 जनवरी	विशाखा कृष्ण द्वादशी 2 जनवरी	अनुराधा कृष्ण त्रयोदशी 3 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण चतुर्दशी 4 जनवरी	मूल कृष्ण अमावस्या 5 जनवरी	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल प्रतिपदा 6 जनवरी
उत्तराषाढ़ा शुक्ल प्रतिपदा 7 जनवरी	श्रवण शुक्ल द्वितीया 8 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल तृतीया 9 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल चतुर्थी 10 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 11 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल षष्ठी 12 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल सप्तमी 13 जनवरी
रेवती शुक्ल अष्टमी 14 जनवरी	अश्विनी शुक्ल नवमी 15 जनवरी	भरणी शुक्ल दशमी 16 जनवरी	कृतिका शुक्ल एकादशी 17 जनवरी	रोहिणी शुक्ल द्वादशी 18 जनवरी	मृगशिरा शुक्ल त्रयोदशी 19 जनवरी	आर्द्रा शुक्ल चतुर्दशी 20 जनवरी

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

"Did you go to the temple of gokuliyas?"

"Yes, please."

"What have you been offered?

"Rs. 5 in cash, 5 seers of sweets, and this promise of Rs. 1,000, if I kill you."

"I have been poisoned many a time. If I have survived these attempts, I am going to outlive the one too."

"I dare not administer poison anybody, particularly to you, who are doing so much for humanity."

"The merciful Swami contented himself with having the sweets thrown away, and the note torn. He warned the servant not to be led astray by such tempters.It was in Bombay that the idea of establishing a permanent organization to carry on the work of social regeneration on Vedic lines among Hindus found a practical shape. The work of reform undertaken by the Brahma Samaj in Calcutta, and that of Prarthana Samaj in Bombay should have suggested to Swamiji and his followers that no permanent good could be achieved without the establishment of a regularly organised body. Before this idea finally materialised, periodic efforts had already been made in this direction in Rajkot to which place Swamiji had gone for a few days, and in Bombay itself during the early stages of Swamiji's stay. Whether it was for want of moral courage required for standing against the common view or the fear of authorities, the matter did not receive much public attention. It was in February, 1875, that serious efforts were set afoot in this organization -Arya Samaj as it was named-and rules of conduct for members were discussed at several sittings. When they had been amended and modified and approved by Swamiji, it was decided to announce them at a public meeting. Swamiji would not sacrifice his principles for the sake of worldly gain or show. When the rules were under discussion, one of his important supporters, Raj Kroshna, suggested that in some shape Advaita be incorporated in the niyamas. It could be given up later on, but it was necessary in the beginning so as to bring in large numbers to their fold.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

दो दिन के सत्र में मैंने बहुत कुछ सीखा। इस सत्र से पूर्व मैं अपने आप व पूर्वजों से अनजान था। आज से पहले अर्थात् सत्र की शुरुआत से पहले मानो मैं अनपढ़ था, अपने ईश्वर व धर्म से अनजान था। मैं तहेदिल से धन्यवाद करता हूं आर्य संजय तंवर जी का जिन्होंने मुझे सत्र के लिए प्रेरित किया।

नामः राहुल, आयुः 23 वर्ष, पताः गांव व डाकखानाः क्योड़क, कैथल, हरियाणा

बहुत अच्छा लगा है अर्थात् ज्ञान का पता चला है। (सत्य)हमने क्यों जन्म लिया है उन सब का ज्ञान प्राप्त हुआ है। हमें धर्म और कर्तव्य का ज्ञान हुआ है। मोक्ष की प्राप्ति हम कैसे कर सकते हैं, उसका ज्ञान प्राप्त हुआ है। ईश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए, कैसे हम अपनी बुद्धि को बढ़ा सकते हैं, उसका ज्ञान प्राप्त हुआ है। आत्मा, परमात्मा में अन्तर और सम्बन्ध का ज्ञान हुआ है। कैसे हम भौतिक दुख से बच सकते हैं। आत्मीय सुख का अनुभव भौतिक सुख से बहुत ज्यादा होता है।

नामः विनीत आर्य, आयुः 24 वर्ष, योग्यताः बी.ए.एम.एस., पताः शुभम विहार, गुरुकुल कागंड़ी, हरिद्वार।

इस सत्र मे आकर सर्वप्रथम धर्म का ज्ञान प्राप्त हुआ, हर धर्म में अपने धर्म का ज्ञान दिया जाता है, परन्तु हिन्दुओं को कहीं नहीं मिला। आज 33 वर्ष की अवस्था में आकर आर्य समाज ने धर्म का ज्ञान कराया, जहां लोगों को अपने मूल धर्म का ज्ञान दिया, जीवन जीने की एक सही सही दिशा मिली, राष्ट्रहित में आर्य समाज कार्यशील है तो हम मन कर्म और वचन से आर्य हैं और आर्यसमाज और राष्ट्रहित में कार्य करने लिए तत्पर हैं।

नामः दान सिंह, आयुः 34 वर्ष, योग्यताः स्नातक, पताः बसई, गुरुग्राम, हरियाणा

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के विचार व अनुभवों को सुनकर मन के कपाट खुल गये व दिमाग में बुद्धि की नई चेतना का विकास हुआ एवं आर्यों के नियमों व सही बुद्धिमान विचारों पर चलने को हमेशा तत्पर रहूंगा व बुद्धि का विकास करने वाले हर पहलू पर प्रयत्नशील रहूंगा।

मैं तन, मन, धन से आर्यों का सहयोग करुंगा।

नामः राजेन्द्र सिंह, आयुः ३४ वर्ष, योग्यताः एम.ए. बी.एड. बी.पी.एड., कार्यः शिक्षक, पताः धामपुर (बिजनौर), उत्तर प्रदेश।

सुबोध, सुगम्य, प्रेरक, प्रेरणदायी, लक्ष्य परक, राष्ट्र भक्त परक एवं दृढ़ निश्चय बनाने में सिद्ध। उपदेश, प्रवचन, शिक्षा, आग्रह, आदेश, विनय, आदि अनेक का जो व्यक्ति को सच्चा मानव सरल एवं प्रतिबद्धता पूर्ण जीवन, पुरुषार्थ गुण कर्म एक स्वभाव बनाने में पूर्णतः समर्थ आदि। यथा शक्ति, यथा मति।

नामः रामकुमार आर्य, आयुः ६२ वर्ष, योग्यताः दसवी, कार्यः प्रिंटिंग, पताः जहांगीरपुर, झज्जर।

आज दिंनाक 11 नवम्बर 2018 को सत्र के माध्यम से पता चला। ईश्वर, धर्म, राष्ट्र, समाज व कर्त्तव्य का ज्ञान ठीक से पाया हूं जो कि पहले इन विषयों से काफी दूर था। मैं आचार्य विद्वानों का ऋणी रहूंगा जिन्होंने मुझे अन्धकार से निकालकर प्रकाश की तरफ ले जाने का काम किया है। उनका धन्यवाद!

नामः वजीर सिंह, आयुः ६२ वर्ष, योग्यताः दसवी, कार्यः कृषि, पताः गांव छारा, झज्जर।

यह सत्र बहुत आच्छा रहा, इस सत्र के दौरान मेरी आंखों से धूल उतर गयी। इस सत्र के लगाने के बाद ही मुझे पता चला कि हम कौन हैं? हमारा धर्म क्या हैं? हमारा कर्त्तव्य क्या हैं? हमारी किन-किन भूलों के कारण हम कुछ लोगों के गुलाम रहें और अब मुझे मालूम हो गया है कि हमारी किस कमजोरी की वजह से हम गुलाम हैं। अब हम यह गलती दोबारा नहीं दोहरायेंगे। धन्यवाद!

मैं और नौ-जवान साथियों को आर्य समाज के साथ जोड़ूंगा।

नामः आर्य प्रदीप पातड़, आयुः २८ वर्ष, योग्यताः बी.टेक, कार्यः शिक्षा प्रबधन्क, पताः गांव बिठमड़ा, हिसार।

संध्या काल

मार्गशीर्ष मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075

(24 नवम्बर 2018 से 22 दिसम्बर 2018)

प्रातः कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 A.M.)

सांय कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 P.M.)

पौष- मास, शिशिर ऋतु, कलि-5119, वि. 2075

(23 दिसम्बर 2018 से 21 जनवरी 2019)

प्रातः कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 A.M.)

सांय कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-८१ से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।